दृष्टि *The Vision*

हिन्दी साहित्य

(Hindi Literature)

टेस्ट-5

(प्रश्न पत्र-I)

DTVF / OPT-23 HL-2305

निर्धारित समय: तीन घंटे	*अधिकतम अंक : 250*
Time Allowed: Three Hours	*Maximum Marks : 250*

नाम (Name): Payal Suryawanshi

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 05 | 20-July-2023

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2023] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2023]:

0	8	4	5	8	1	7

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): ____________ टिप्पणी (Remarks): ____________

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

Feedback

1. Context Proficiency (संदर्भ दक्षता)
2. Introduction Proficiency (परिचय दक्षता)
3. Content Proficiency (विषय-वस्तु दक्षता)
4. Language/Flow (भाषा/प्रवाह)
5. Conclusion Proficiency (निष्कर्ष दक्षता)
6. Presentation Proficiency (प्रस्तुति दक्षता)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

खण्ड – क

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: **10 × 5 = 50**

(क) हिन्दी भाषा का क्षेत्र

हिन्दी भाषा को भारतीय संविधान में अनुसूची 8 में आधारिक भाषाओं में शामिल किया गया है। साथ ही भारत की राजभाषा का दर्जा भी प्राप्त है।

हिन्दी भाषा का क्षेत्र

1) हिन्दी भाषा, भारत के बड़े क्षेत्र में बोली जाती है मुख्यत: भारत के उत्तरी राज्यों जैसे- मध्यप्रदेश, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश, गुजरात, छत्तीसगढ़, उत्तरप्रदेश, बिहार आदि प्रमुख हिन्दी भाषी राज्य है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

c) इसके साथ ही, दक्षिण भारत में भी केरल, कर्नाटक, आंध्रप्रदेश, महाराष्ट्र आदि राज्यों में हिन्दी भाषा समझी जाती है।

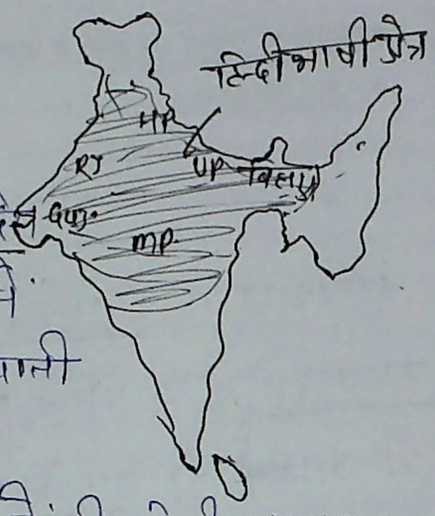

केवल तमिलनाडु में ही हिन्दी भाषा के प्रयोग की मात्रा कम है।

3) भारत के अलावा, 120 देशों में भी हिन्दी भाषा बोली और समझी जाती है। साथ ही, साहित्य, शिक्षण संस्थानों में भी उपयोगी है।

जैसे - त्रिनिनाद, टोबैगो, मॉरीशस आदि राज्यों में

साथ ही, इंग्लैण्ड, जर्मनी, अमेरिका में भी हिन्दी भाषा का प्रयोग होता है।

अतः हिन्दी भाषा का क्षेत्र विस्तृत है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) देवनागरी लिपि के सुधार के प्रयासों में 'काशी नागरी प्रचारिणी सभा' का योगदान

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भारतीय संविधान में देवनागरी लिपि का प्रयोग किया गया साथ ही, गणित के अंकों हेतु अंग्रेजी अंकों का प्रयोग है।

देवनागरी लिपि के विकास से इसके मानकीकरण में कई विद्वानों और संगठनों का महत्वपूर्ण योगदान है।

काशी नागरी प्रचारिणी सभा

↓

योगदान

(1) काशी नागरी प्रचारिणी सभा का गठन उत्तरप्रदेश में हिन्दी भाषा को देश की राष्ट्रभाषा बनाने और देवनागरी लिपि में सुधार हेतु किया गया था।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

२) इसके द्वारा देवनागरी लिपि में स्पष्ट वर्णमाला का निर्माण किया गया

३) हिन्दी व्याकरण के लेखन में सहयोग किया गया

४) देवनागरी लिपि की कमियों और जटिलता को कम करने के प्रयास किया गया।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) हिन्दी भाषा का मानकीकरण और आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी

किसी भाषा के मानकीकरण हेतु लम्बा समय लगता है। उसी प्रकार हिन्दी भाषा के विकास से मानकीकरण की यात्रा भी लम्बी और गतिशील है।

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी

योगदान

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी, हिन्दी साहित्य के द्विवेदी युग के महान समीक्षक और निबंधकार रहे है। इनके द्वारा हिन्दी भाषा के साहित्य में प्रयोग और राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी को दर्जा दिलाने हेतु अथक प्रयास किये गये। जो निम्न है -

(1) सर्वप्रथम हिन्दी भाषा को गद्य और पद्य साहित्य में प्रयोग किया गया।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(2) हिन्दी भाषा के व्याकरण के विकास में सहयोग दिया गया

(3) हिन्दी भाषा की ध्वनि व्यवस्था और शब्द व्यवस्था के मानकीकरण में विशेष योगदान

(4) मात्राओं के मानक रूप का विकास

(5) वर्तनी की शुद्धता पर बल

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) भाषा और बोली में अंतर

भाषा और बोली में अंतर वैज्ञानिक रूप में नहीं अपितु सामाजिक रूप में है। अतः बोली ही व्यापक रूप में प्रयोग होने बाद भाषा का रूप ग्रहण कर लेती है।

भाषा और बोली में अंतर

1) भाषा का क्षेत्र व्यापक होता है और बोली का क्षेत्र सीमित होता है।

उदाहरण - हिन्दी भाषा पूरे देश में बोली और समझी जाती है।
जबकि अवधी बोली केवल पूर्वी UP में

2) भाषा के उपयोग करने वालों की संख्या अधिक होती है जबकि बोली के प्रयोग करने वालों की कम

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(3) भाषा का व्याकरण मानक रूप में होता है जबकि बोली का नहीं।

(4) संपर्क हेतु भाषा का व्यापक प्रयोग होता है जबकि बोली का सीमित होता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) 'हरियाणी' बोली

हरियाणी बोली मुख्यतः शौरसेनी अपभ्रंश के अंतर्गत पश्चिमी हिन्दी उपभाषा के तहत एक बोली है।

शौरसेनी अपभ्रंश
↓
पश्चिमी हिन्दी
↓
हरियाणी बोली

प्रयोग क्षेत्र – हरियाणी मुख्यतः हरियाणा राज्य के सोनीपत, पानीपत आदि जिलों में बोली जाती है साथ ही दिल्ली, राजस्थान के उत्तर-पूर्वी क्षेत्र में भी छिटपुट प्रयोग होता है।

व्याकरणिक विशेषताएँ

(1) हरियाणी बोली में; हरियाणा की

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

संस्कृति के अनुसार कठोरता दिखायी देती है।

(2) ण ध्वनि का प्रयोग न के स्थान पर
पानी < पाणी

(3) ल के स्थान पर ळ का प्रयोग
बालक < बाळक

(4) ट वर्ग ध्वनियों का प्रयोग अधिक

(5) सर्वनाम व्यवस्था के तहत
न वर्ग समूह का अधिक प्रयोग

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) अपभ्रंश की व्याकरणिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

अपभ्रंश का प्रयोग मुख्यत: मध्यकालीन साहित्य में 500 से 1100 ई० के मध्य माना जाता है।

मुख्यत: आदिकाल में सिद्ध-नाथ साहित्य में, जैन धार्मिक साहित्य, और अमीर खुसरो, रासो साहित्य के काव्यों में भी प्रयोग हुआ है।

व्याकरणिक विशेषताएँ

ध्वनि व्यवस्था

(1) ए और ओ ध्वनि की अनुपस्थिति

(2) ड, ढ, न, म आदि ध्वनियों का भी विकास नहीं हुआ था।

(3) स्वरांत शब्दों का प्रयोग- जगत → जग

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(4) स्वरागम का प्रयोग
क्रिया → किरिया

(5) महाप्राण ध्वनियों का अल्पप्राणीकरण प्रारम्भ

उदा०- हाथ → हात

(6)

व्याकरणिक व्यवस्था

(1) निर्विभक्तिक प्रयोग - अर्थात् परसर्गों और विभक्ति दोनों का प्रयोग नहीं।

(2) कारक व्यवस्था में विकास प्रारम्भ हुआ था।

(3) क्रिया व्यवस्था के तहत
वर्तमान काल हेतु - त वर्ग - करत, देखत
भूतकाल हेतु - ब वर्ग - देखब, खाइब
भविष्यकाल - ग वर्ग - होगो

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(4) लिंग व्यवस्था में - नपुंसक लिंग का प्रयोग कम।
↓
केवल दो ही लिंग - पुल्लिंग और स्त्रीलिंग

(5) वचन व्यवस्था में भी केवल दो वचनों का प्रयोग।
एकवचन और बहुवचन

(6) सर्वनाम व्यवस्था के तहत कुछ जैसे - मैं, हम, तौ, तू का प्रयोग

(7) न के स्थान पर ण का प्रयोग।

" पढिऊ सउल सत्यं बखाणह:
देहहि सुहद बसन्त ण जाणह। "
(सिद्ध साहित्य)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

शब्द व्यवस्था

1) संस्कृत के शब्दों का तद्भवीकरण प्रारम्भ हो गया था।

2) कुछ विदेशी शब्दों जैसे-फारसी, अरबी का भी शामिल होना।

3) देशज शब्दों का भी प्रयोग

जोगी सोई जाणिये, जग ते रहे उदास,
तत निरंजन पाइये, कहे मत्छंदर नाथ।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) राष्ट्रभाषा हिन्दी के विकास में सेठ गोविन्ददास के योगदान पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

किसी देश की पहचान हेतु राष्ट्रभाषा का अधिक महत्व होता है। उदाहरण के लिये - इंग्लैण्ड में अंग्रेजी भाषा, जर्मनी में जर्मन भाषा, चीन में मण्डारिन।

इसी प्रकार भारत जैसे बड़े देश में भी एक राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी की स्थापना हेतु कई नेताओं का अहम भूमिका रही है।

सेठ गोविंददास का योगदान

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) हिन्दी की लिंग-संरचना से जुड़ी समस्याओं पर विचार कीजिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिन्दी भाषा में वर्तमान में भी लिंग संरचना ने पूर्णतः वस्तुनिष्ठता का हासिल नहीं किया। अतः आज भी कुछ शब्दों को किसी लिंग में रखा जाये इसकी समस्या विद्यमान है।

हिन्दी का विकास संस्कृत से हुआ है, परन्तु जहाँ संस्कृत में तीन लिंग थे, वहीं हिन्दी में केवल दो ही लिंगों को स्वीकृति प्राप्त है।

इसी कारण जो शब्द लिंग निरपेक्ष हैं उन्हें किस समूह में रखा जाये इसकी समस्या आज भी विद्यमान है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

जैसे-

(1) राजनीतिक पदों जैसे - राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री केवल पुल्लिंग को दर्शाते हैं अतः स्त्रीलिंग हेतु समस्या।

(2) कुछ शब्दों जैसे - घर, कान, नाक को किस समूह में डाला जाये।

(3) लिंग निर्णय की समस्या क्योंकि दो ही लिंग। उदा० दही, पानी

(4) देशज और विदेशज शब्दों का मूल स्थान में वर्गीकरण कुछ और होने से समस्या

(5) वचन परिवर्तन के पश्चात् लिंग परिवर्तन की समस्या।
उदा० लड़के जाते हैं। लड़कियाँ जाती हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

- भारतेंदु हरिश्चन्द्र ने लिंग और क्रिया दोनों में परिवर्तन किया।

लड़कियाँ जातियाँ है।

समाधान

→ वर्तमान में पहाड़ों, पर्वतों के नामों को पुल्लिंग में शामिल किया गया है। वहीं तिथियों, नदियों के नामों को स्त्रीलिंग में।

→ दो ही लिंग होने के कारण कुछ लिंगों को पुल्लिंग में और कुछ को स्त्रीलिंग में।

→ पदनामों को लिंग निरपेक्ष शब्द माना गया है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) देवनागरी लिपि को वैज्ञानिक लिपि कहने के औचित्य पर विचार कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) भारत की भाषा-समस्या के संदर्भ में 'त्रिभाषा सूत्र' की अवधारणा पर प्रकाश डालिए। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात से ही भारत में राज्य निर्माण आदि में भाषा का महत्वपूर्ण प्रभाव रहा है। जिसने भारत को दो भागों - उत्तर भारत और दक्षिण भारत में विभाजित कर दिया है।

भारत की भाषा समस्या

(1) भारत की सांस्कृतिक और भाषायी विविधता के कारण, भाषा आधारित राज्यों का निर्माण।

उदाहरण - 1953 में तेलगू भाषी राज्य आंध्रप्रदेश का निर्माण

(2) राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी की स्वीकृति के विरुद्ध, दक्षिण राज्यों द्वारा विरोध

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(3) शिक्षा में हिन्दी भाषा के जबरदस्ती प्रयोग का विरोध

(4) भाषायी द्वैतवाद और अलगाववाद की नीति।

मुख्यतः तमिलनाडु राज्य द्वारा।

इन्हीं सारी समस्याओं के देखते हुए 1968 में त्रिभाषा फार्मूला लाया गया जो सम्पूर्ण देश में भाषायी एकरूपता को बढ़ाने और संघर्ष को कम करने में सहायक था।

त्रिभाषा सूत्र 1968

प्रावधान - 1) सभी राज्यों में हिन्दीभाषा का प्रयोग होगा जो सम्पूर्ण देश को एक सूत्र में बांधेगी।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

2) वैश्विक पहुँच हेतु अंग्रेजी भाषा का सहयोग भी सभी राज्यों द्वारा होना चाहिये।

(3) उत्तरी राज्यों को दक्षिणी राज्यों की भाषा और दक्षिणी राज्यों को हिन्दी भाषा सिखनी चाहिये।

इस प्रकार त्रिभाषा फार्मूला, उत्तरी और दक्षिणी राज्यों के बीच भाषायी समन्वय स्थापित करने और राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी को स्थापित करने हेतु समाधान प्रस्तुत करता है।

कार्यान्वयन में समस्याएँ

(1) उत्तरी राज्यों द्वारा दक्षिणी भाषाओं जैसे- तमिल, मलयालम, तेलगू आदि

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

सिखने में रुचि नहीं लेना।

(5) अंग्रेजी भाषा, आज भी कई राज्यों में शिक्षा हेतु बहुत कम ~~उपयोग~~ है। प्रयोग की जाती

(6) कुछ दक्षिणी राज्यों जैसे तमिलनाडु द्वारा त्रिभाषा सूत्र का अस्वीकार।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'अपभ्रंश' की शब्दकोशीय प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिये। 15

अपभ्रंश का प्रारंभ संस्कृत भाषा के सरलीकरण की प्रक्रिया में ही 500 से 1100 ई. के मध्य हुआ था।

इसका प्रयोग मध्यकालीन हिन्दी में हुआ था। मुख्यत: आदिकाल में सिद्ध नाथ साहित्य, जैन साहित्य और रासो काव्यों में अपभ्रंश का प्रयोग हुआ है।

सरहपा, शबरपा, कण्हपा प्रमुख अपभ्रंश भाषा के साहित्यकार है।

"पण्डिअ सअल सत्त बक्खाणइ,
देहहि बुद्ध बसंत ण जाणइ"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

शब्दकोषीय प्रवृत्तियाँ

(1) चूँकि अपभ्रंश का विकास संस्कृत भाषा के सरलीकरण से ही हुआ है। अतः तत्सम शब्दों के तद्भवीकरण की प्रक्रिया प्रारम्भ।

उदाहरण -

कार्य → कम्म (द्वित्वीकरण)

कम्म → काम (क्षतिपूर्ति दीर्घीकरण)

(2) भाषा की लचीलता के कारण विदेशी भाषा जैसे - फारसी, अरबी शब्दों की स्वीकृति।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(3) देशज शब्दों का प्रयोग भी बहुतायत में हुआ है।

उदाहरण - किलकिल (ध्वन्यात्मकता)

(4) चूँकि ब्राह्मण उत्थान और भक्तिकाल के प्रारम्भ के कारण तद्भव शब्दों से पुनः तत्समीकरण की प्रक्रिया प्रारम्भ हुई।

उदाहरण - सुम → सूत

इस प्रकार, अपभ्रंश भाषा का विकास आदिकाल और भक्तिकाल के प्रारंभ तक दिखाई देता है।

उदा०

तिक्खा तुरिय न माणिया, गोरी गले न लग्गु।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) हिन्दी की लिंग-व्यवस्था का स्वरूप स्पष्ट कीजिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिन्दी भाषा के व्याकरणिक संरचना में विकारोत्पादक तत्वों में लिंग व्यवस्था का भी योगदान है।

लिंग व्यवस्था का स्वरूप

(1) हिन्दी में केवल दो ही लिंग की स्वीकृति - पुल्लिंग और स्त्रीलिंग जबकि संस्कृत में नपुंसकलिंग भी होता है।
वही अंग्रेजी में 4 लिंग होते हैं जिसमें उभयलिंग की भी व्यवस्था है।

(2) क्रियाओं में परिवर्तन लिंग के सापेक्ष होता है।
उदा० लड़का जाता है। (पुल्लिंग)
लड़की जाती है। (स्त्रीलिंग)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(3) पुल्लिंग से स्त्रीलिंग में परिवर्तन हेतु 9 प्रत्ययों का प्रयोग स्वीकृत है।
उदाहरण - इन, ईया, अन, ई, आइन.

लड़का → लड़की
ग्वाला → ग्वालिन
ठाकुर → ठकुराइन

(4) पुल्लिंग जातिवाचक संज्ञाएँ मुख्यतः अकारान्त होती है।
उदाहरण - सुरेश, कमल

* स्त्रीलिंग जातिवाचक संज्ञाएँ मुख्यतः आकारांत होती है।
उदा० - सरीता, गीता

(5) विशेषण भी लिंग के अनुसार परिवर्तित होते है।
उदा० - काली लड़की, काला लड़का

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

लिंग व्यवस्था में समस्या

→ लिंग निर्णय में समस्या।
जैसे- लिंग निरपेक्ष शब्दों का कहाँ रखा जाये।
जैसे- दही, पानी

→ पदनामों के वर्गीकरण की समस्या।
उदा०- राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री

→ देशज और विदेशज शब्दों के लिंग आधारित वर्गीकरण की समस्याएं।

वर्तमान की लिंग व्यवस्था कुछ कमियों के साथ मानकीकरण का स्तर को छूती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

खण्ड - ख

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: **10 × 5 = 50**

(क) साहित्यिक अवधी की सीमाएँ

अवधी का प्रयोग मुख्यतः भक्तिकाल में रामभक्ति काव्यधारा और सूफीकाव्यधारा के अंतर्गत साहित्य में प्रारम्भ हुआ।

उदाहरण -
जायसी की पद्मावत (ठेठ अवधी)
तुलसीदास की रामचरितमानस (तत्सम अवधी)

अर्द्धमागधी अपभ्रंश
↓
पूर्वी हिन्दी उपभाषा
↓
अवधी बोली
↓
सीमाएं

(1) यह भाषा मुख्यतः लोकमंगलवादी धारा संबंधी साहित्य के सम्प्रेषण

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

तक ही सीमित रही।

जिस कारण लोकरंजन काव्य, शृंगार, सख्य, वात्सल्य के सम्प्रेषण में कमजोर।

↓

परिणाम- अखिल भारतीय काव्यभाषा नहीं बन सकी।

(२) प्रयोग उत्त भी ब्रजभाषा की अपेक्षा सीमित ही रहा। जैसे - केवल ब्रवी उत्तरप्रदेश तक।

(३) बदलते परिवेश के अनुसार जैसे - दरबारी माहौल, मनोरंजन, प्रेमकाव्य हेतु उपयुक्त नहीं थी।

(५) अवधी भाषा की लचीलता की ब्रजभाषा की अपेक्षा कम, इसलिये अन्य भाषायी शब्दों की स्वीकृति कम।

इन्हीं कारणों से अवधी के स्थान को ब्रजभाषा ने लिया।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भारतीय संविधान में हिन्दी और अंग्रेजी दो राजभाषाओं की स्वीकृति है। अर्थात केंद्र और राज्य के कार्यों संबंधी दस्तावेजों और अभिलेखों का दोनों भाषाओं में मान्य प्रयोग होगा।

राजभाषा हिन्दी

संविधान में अनुच्छेद ३५३ से ३५१ तक हिन्दी भाषा संबंधी है। जिनके तहत हिन्दी एक राजभाषा है।

अर्थात राज्य के कार्य, संवाद, कार्यवाही आदि में हिन्दी का प्रयोग होगा।

साथ ही हिन्दी अनुसूची ८ के

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अंतर्गत आधिकारिक भाषा का दर्जा प्राप्त भी है।

देवनागरी अंक

संविधान में देवनागरी अंकों की जटिलता, दुरूहता और डिस्थना के कारण देवनागरी अंको के स्थान पर अंग्रेजी अंकों के प्रयोग को मान्यता दी है।

	अंग्रेजी	देवनागरी
उदाहरण-	9	९, ६.
	8	८, ट

अतः भारतीय संविधान में हिन्दी के देवनागरी लिपि को स्वीकार किया है परन्तु देवनागरी अंक का प्रयोग नहीं होता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) 19वीं शताब्दी में 'खड़ी बोली' के विकास में प्रेस की भूमिका

19 वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में आधुनिकता के साथ खड़ी बोली का प्रयोग स्पष्ट रूप से होने लगा। साथ ही, आदिकाल में खुसरो के काव्य, और मध्यकाल में भी इसके छिटपुट प्रयोग दिखाई देते हैं।

खड़ी बोली का विकास

चूँकि बदलते परिवेश के साथ ब्रजभाषा और अवधी का प्रयोग, आधुनिक विचारधारा को सम्प्रेषित करने में असफल थी इसलिये, खड़ी बोली ने इनका स्थान लिया।

→ आधुनिकता का आगमन
→ विदेशी कम्पनी और लाभ का शासन
→ ईसाई मिशनरियों द्वारा प्रचार
→ फोर्ट विलियम कॉलेज द्वारा मान्यता

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

प्रेस की भूमिका।

प्रेस के आविष्कार ने खड़ी बोली जैसी सीधी, सरल भाषा के प्रचार में विशेष योगदान दिया।

→ पत्र-, पत्रिकाओं, समाचार पत्रों द्वारा सम्पूर्ण देश में प्रसार।
उदाहरण- उदन्त मार्तण्ड, कविवचन सुधा हिन्दी प्रदीप, ब्राह्मण आदि।

→ इसाई मिशनरियों द्वारा बाइबिल के अनुवाद के प्रचार हेतु प्रेस द्वारा पत्रिकाओं में खड़ी बोली का प्रयोग।

→ स्वतंत्रता आंदोलन में प्रेस द्वारा खड़ी बोली में राष्ट्रवाद का प्रसार

→ खड़ी बोली के मानकीकरण ने प्रेस द्वारा छपाई को सरल बनाया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) 'खड़ी बोली आन्दोलन' में अयोध्या प्रसाद खत्री की भूमिका।

19 वी शताब्दी के प्रारम्भ से ही सम्पूर्ण राष्ट्र को जोड़ने हेतु राष्ट्रभाषा की मांग प्रारम्भ हो गई। आधुनिकता के आगमन और ज्ञान के प्रसार हेतु स्पष्ट, खरी बोली की आवश्यकता थी।

ब्रजभाषा और अवधी, साहित्य और पद्य साहित्य हेतु उपयुक्त थी परन्तु गद्य साहित्य हेतु नहीं।

अतः खड़ी बोली जैसी सरल सीधी भाषा के प्रयोग को बढ़ावा देने हेतु कई विद्वानों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

अयोध्या प्रसाद खत्री की भूमिका

(1) इनके द्वारा गद्य साहित्य में खड़ी बोली के प्रयोग को बढ़ावा दिया गया।

(2) साथ ही, पद्य साहित्य में भी सरल शब्दों में काव्य रचना हेतु खड़ी बोली का प्रयोग।

(3) राष्ट्रीय आंदोलन में राष्ट्रभाषा के रूप में खड़ी बोली के प्रयोग पर बल।

(4) पत्र, पत्रिकाओं द्वारा प्रसार को बढ़ावा।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) राजभाषा अधिनियम, 1963

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् देश की राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी के प्रयोग पर देश में असहमति देखते हुए।

तात्कालिक प्रधानमंत्री द्वारा स्वतंत्रता के 15 वर्षों तक राजभाषा के रूप में अंग्रेजी के प्रयोग को भी स्वीकृति दी गई। जिसकी सीमा 1965 तक थी।

इसी कारण वर्ष 1963 में राजभाषा अधिनियम 1963 पारित किया गया।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

राजभाषा अधिनियम 1963

प्रावधान -

(1) दक्षिणी राज्यों में हिन्दी के प्रयोग की अस्वीकृति के देखते हुए अंग्रेजी के प्रयोग को 1965 के बाद भी जारी रखने का निर्णय लिया गया।

(2) सर्वोच्च न्यायालय में अंग्रेजी भाषा में ही कार्रवाई की स्वीकृति।

(3) यदि कोई राज्य किसी लोकभाषा का प्रयोग करना चाहे तो राष्ट्रपति द्वारा प्रस्ताव के माध्यम से

(4) अंग्रेजी के दस्तावेजों को ही प्रामाणिक मान्यता दी जायेगी न कि अनुवादित हिन्दी को।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) देवनागरी लिपि के मानकीकरण के विभिन्न प्रयासों पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

8. (क) मानक हिंदी की कारक-व्यवस्था पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मानक हिन्दी की व्याकरणिक संरचना में कारक व्यवस्था का महत्वपूर्ण योगदान होता है।

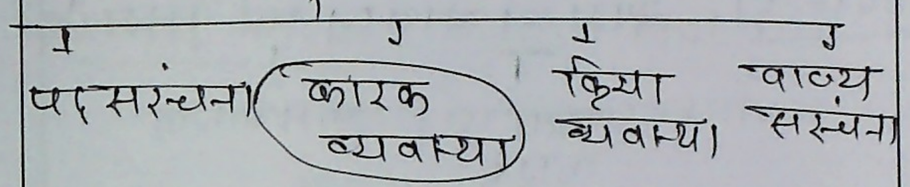

संस्कृत भाषा में मुख्यतः विभक्तियों का प्रयोग किया जाता था। परन्तु संस्कृत के सरलीकरण तथा परसर्गों का विकास प्रारम्भ हुआ। फलतः मानक हिन्दी में वस्तुनिष्ठ कारक व्यवस्था की स्थापना हुई।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

कारक व्यवस्था

कारक का प्रयोग प्रमुखत: संज्ञा या सर्वनाम का संबंध क्रिया व अन्य पदों से दर्शाने हेतु किया जाता है।

उदाहरण - राम ने रावण को मारा।
(ने - कर्ता कारक; को - कर्मकारक)

संस्कृत के समान हिन्दी में भी 8 कारक की व्यवस्था है।

कर्ता - ने, 0
कर्म - को
करण - से
सम्प्रदान - के लिये
अपादान - से (वियोगार्थ)
संबंध - का, के, की
अधिकरण - में, पर
संबोधन - हे, अरे, ओ!

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

कारक व्यवस्था का वर्गीकरण।

(1) कर्ता कारक - जिसके द्वारा कार्य किया जाता है।

उदा० राम ने खाना खाया।

(2) कर्म कारक - मुख्यत: किये गये कार्य से संबंध स्थापित करता है।

उदा० राम ने सीता को किताब दी।

(3) करण कारक - माध्यम को संदर्भित करता है।

उदा० पिता ने पुत्र को छड़ी से मारा।

(4) सम्प्रदान कारक - उद्देश्य को दर्शाता है।

उदा० - मनोज ने गीता से दहेज के लिये शादी की।

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(5) अपादान कारक - किसी भी चीज से अलग होने का भाव।
उदा० - पेड़ से पत्ता टूट कर अलग हो गया।

(6) संबंध कारक - संबंध दर्शाने हेतु
उदा० राम, सीता का पति है।

(7) अधिकरण कारक - अधिकार की भावना प्रदर्शित करने।
उदाहरण - पूरे घर में केवल मेरा अधिकार है।

(8) सम्बोधन कारक - आश्चर्य की भावना को प्रदर्शित करने।
उदा० - अरे! तुम परीक्षा पास हो गये?

इस प्रकार, संस्कृत से हिन्दी में कारक व्यवस्था के सरलीकरण द्वारा एक मानक व्यवस्था की स्थापना हुई।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) मध्यकाल में साहित्यिक भाषा के रूप में 'अवधी' के विकास में सूफी काव्यधारा के योगदानपर प्रकाश डालिये। 15

मध्यकाल में भक्तिकाल के आरम्भ के साथ ही अवधी भाषा का प्रयोग भी प्रारम्भ हुआ। जिसका सर्वप्रथम प्रयोग सूफी कवियों ने अपने प्रेमाख्यानों में अवधी भाषा को जगह दी।

उदाहरण - जायसी - पद्मावत
कुतुबन - मिरगावती
मंझन - मधुमालती
हंस जवाहिर - अनुराग बांसुरी
मुल्ला दाउद - चंदायन
जायसी - कन्हावत

इस प्रकार, सूफी काव्यधारा में

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

हिंदी-मुस्लिम संस्कृति समन्वय के साथ ही उर्दू-फारसी-अरबी भाषा के समन्वय से अवधी भाषा का प्रयोग प्रारम्भ हुआ।

जायसी द्वारा अवधी भाषा का प्रयोग

जायसी द्वारा पद्मावत में ठेठ अवधी का प्रयोग किया गया है।

यह तन जारौं छार कै, कहौं कि पवन उड़ाव।
मेकु तेहि मारग उड़ि परै, कंत धरै जहँ पाव॥

इसी के साथ जायसी ने अरबी-फारसी शब्दों के प्रयोग द्वारा अवधी की लचीलता को बनाए रखा।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

जेठ जरै जग चलै लुवारा,
उठै बवण्डर धिकै पहारा।

रामभक्ति काव्यधारा में अवधी

सूफी काव्य के पश्चात तुलसीदास द्वारा भी अवधी के प्रयोग को जारी रखा गया।

परहित सरिस धर्म नहीं भाई।
परपीड़ा सम नहिं अधमाई।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) अवधी और भोजपुरी के अंतर पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अवधी और भोजपुरी भाषा दोनों ही उत्तरप्रदेश और बिहार के बीच ~~में~~ संक्रमण वाले क्षेत्र में बोली जाती है।

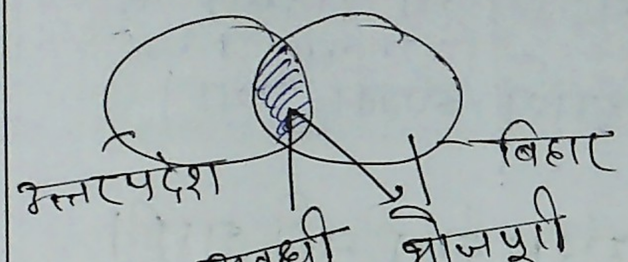

अवधी और भोजपुरी में अंतर

अवधी	भोजपुरी
→ अर्द्धमागधी अपभ्रंश	→ मागधी अपभ्रंश

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

अवधी	भोजपुरी
→ पूर्वी हिन्दी उपभाषा	→ बिहारी हिन्दी उपभाषा
→ वर्तमान में सीमित प्रयोग	→ वर्तमान में भी प्रासंगिक मुख्यतः फिल्मों
→ मुख्यतः काव्यात्मक	→ काव्यात्मक + गद्यात्मक
→ केवल भारत के क्षेत्र तक	→ विदेशों में भी व्यापक प्रयोग उदा० मारीशस - त्रिनिदाद - गोवेगा)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

अवधी	भोजपुरी
→ मानकीकरण	→ कोई मानकीकरण नहीं
→ लोकमंगलकारी भाषा	→ मनोरंजनपरक भाषा
→ मुख्यतः उत्तरप्रदेश में	→ बिहार राज्य में
→ प्रमुख रचनाएँ पद्मावत - जायसी रामचरितमानस - तुलसी	

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation